एकलव्य का प्रकाशन

नटखट गधा

एक चित्रकथा

आचार्य विष्णुकांत पाण्डेय

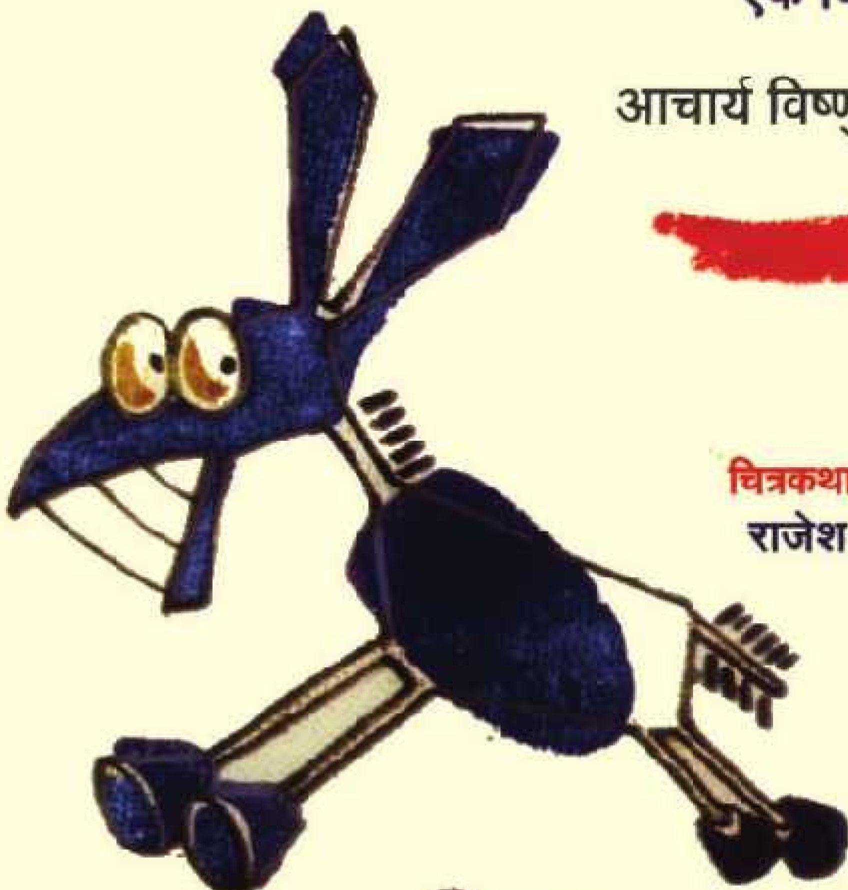

चित्रकथा रूपांतरण
राजेश उत्साही

चित्रांकन
रंजित बालमुचु

नटखट गधा

एक चित्रकथा

आचार्य विष्णुकांत पाण्डेय

चित्रकथा रूपांतरण
राजेश उत्साही

चित्रांकन
रंजित बालमुचु

एकलव्य का प्रकाशन

नटखट गधा

एक चित्रकथा

Natkhat Gadha

मूलकथा: आचार्य विष्णुकान्त पाण्डेय

चित्रकथा रूपान्तरण: राजेश उत्साही

चित्र: रंजित बालमुचु

© एकलव्य

पहला संस्करण: अप्रैल, 2003 / 10,000 प्रतियाँ

प्रथम पुनर्मुद्रण: जून, 2006 / 3,000 प्रतियाँ

द्वितीय पुनर्मुद्रण: जुलाई, 2007 / 5,000 प्रतियाँ

सर रतन टाटा ट्रस्ट के वित्तीय सहयोग से विकसित।

70 gsm मेपलिथो एवं 130 gsm आर्ट कार्ड (कवर) पर प्रकाशित।

ISBN: 81-87171-49-6

प्रकाशक : एकलव्य

ई-7/453 HIG अरेरा कॉलोनी

भोपाल 462016 (म.प्र.)

फोन: 0755 - 246 3380

फैक्स: 0755 - 246 1703

www.eklavya.in

सम्पादकीय: books@eklavya.in

किताबें मँगवाने के लिए: pitara@eklavya.in

मुद्रण: श्रेया ऑफसेट प्रिंटर्स, भोपाल। फोन: 0755- 4275001

एकलव्य: एक परिचय

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है। जो पिछले कई वर्षों से शिक्षा एवं जनविज्ञान के क्षेत्र में काम कर रही है।

एकलव्य का मुख्य उद्देश्य है ऐसी शिक्षा जो बच्चे व उसके पर्यावरण से जुड़ी हो, जो खेल, गतिविधि व सृजनात्मक पहलुओं पर आधारित हो। एकलव्य ने अपने काम के दौरान पाया कि स्कूली प्रयास तभी सार्थक हो सकते हैं जब बच्चों को स्कूली समय के बाद घर में भी रचनात्मक गतिविधियों के साधन उपलब्ध हों। किताबें तथा पत्रिकाएँ ऐसे साधनों का एक अहम हिस्सा हैं।

पिछले कुछ वर्षों में एकलव्य ने अपने काम का विस्तार प्रकाशन के क्षेत्र में भी किया है। बच्चों की पत्रिका *चकमक* के अलावा *स्रोत* (विज्ञान एवं टेक्नोलॉजी फीचर) तथा *संदर्भ* (शैक्षिक पत्रिका) एकलव्य के नियमित प्रकाशन हैं। शिक्षा, जनविज्ञान एवं बच्चों के लिए सृजनात्मक गतिविधियों के अलावा विकास के व्यापक मुद्दों से जुड़ी किताबें, पुस्तिकाएँ, सामग्री आदि भी एकलव्य ने विकसित एवं प्रकाशित की है।

एक था गधा। धोबी का गधा। जब काम नहीं होता तो वह दिन भर धोबीघाट के पास वाले मैदान में घास चरता और दौड़ लगाता रहता।

जब उसका मन करता - चींपों.. चींपों करने लगता। बिना कारण ही दुलत्ती झाड़ देता। ऐसी ही तरह-तरह की नटखटिया हरकतों के कारण उसका नाम नटखट पड़ गया था।

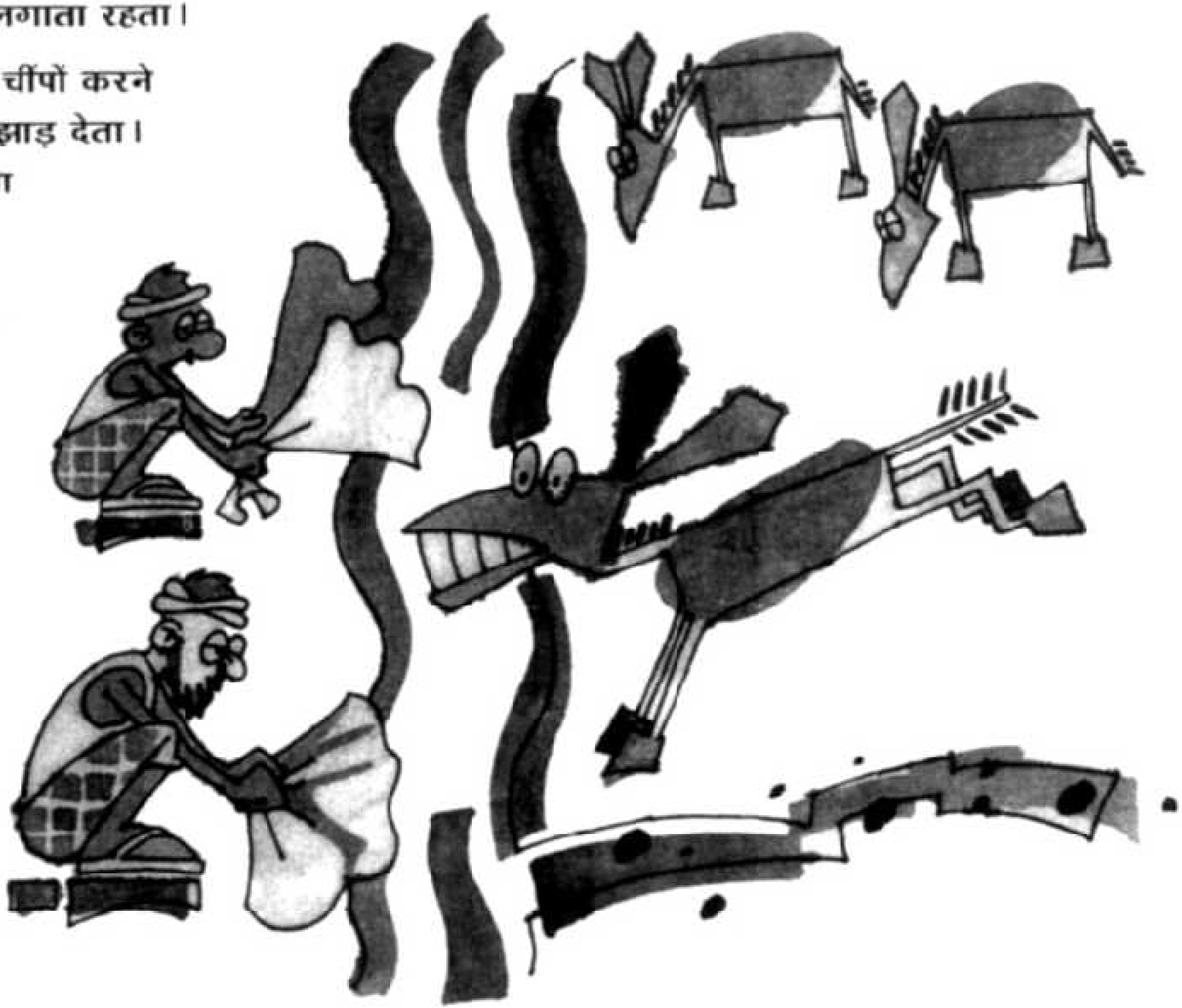

एक दिन नटखट ने देखा कि धोबीघाट के
पास वाले मैदान में कुछ लोग तम्बू लगा रहे हैं।
उसे कुछ समझ नहीं आया कि
वहाँ क्या हो रहा है।

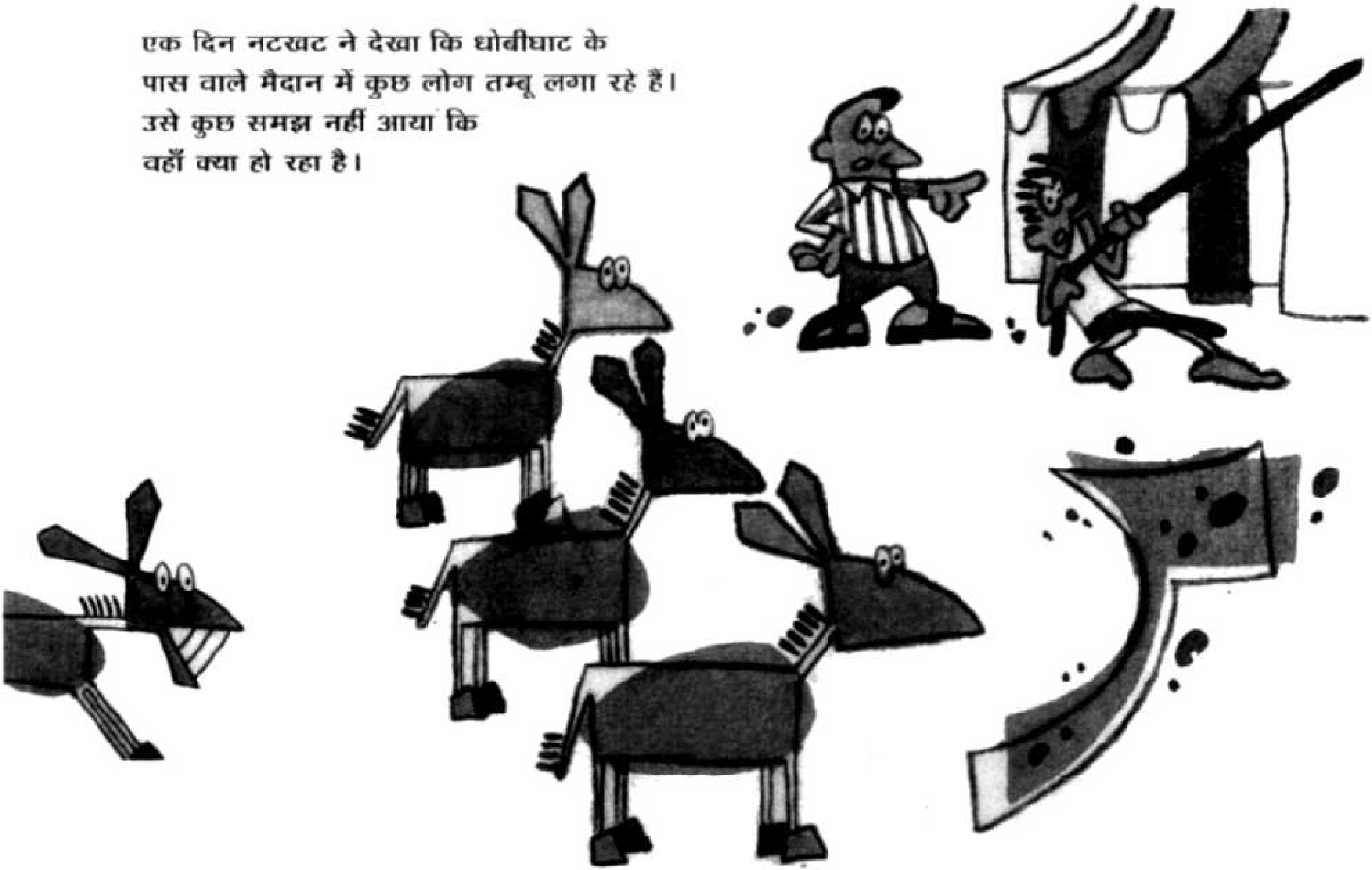

नटखट ने दो धोबियों को आपस में बात करते सुना, 'अरे भैया, वैसे ही गधों को घास कम मिलती है। ऊपर से ये सरकस वाले आ धमके। पूरा मैदान घेर लिया। अब कहाँ चरेंगे गधे हमारे!'

नटखट ने सरकस का नाम पहली बार सुना था। उसने अपनी बिरादरी के सब लोगों से पूछा, 'सरकस क्या होता है?' किसी को नहीं मालूम था।

अन्त में वह अपनी बिरादरी में सबसे बुद्धिमान समझे जानेवाले बूढ़े गधे के पास पहुँचा। उसने भी अपनी लड़खड़ाती आवाज़ में कहा, 'पता नहीं बेटा! आज के ज़माने में रोज़ नई-नई चीज़ें निकलती हैं। कहाँ तक जानकारी रखें।'

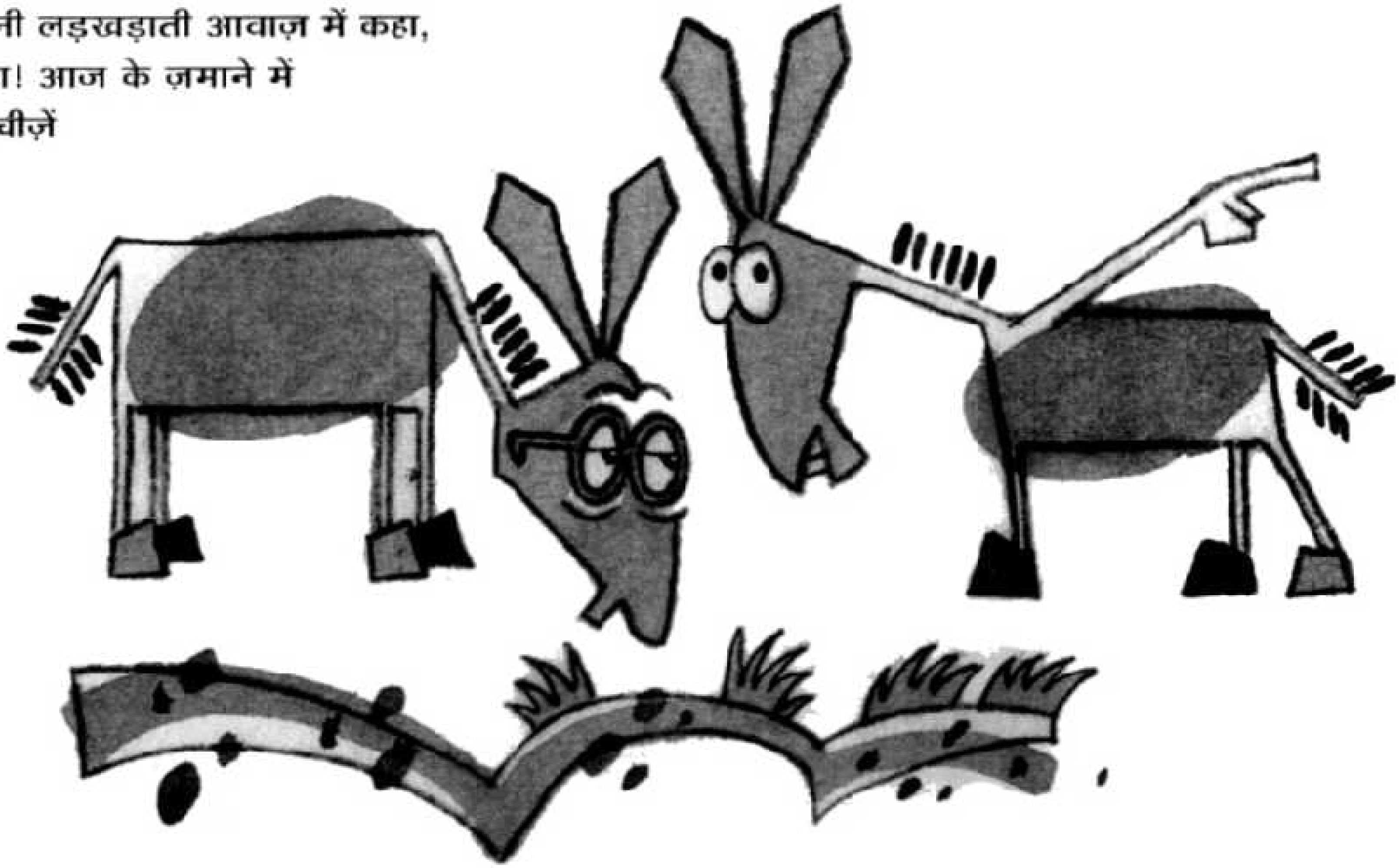

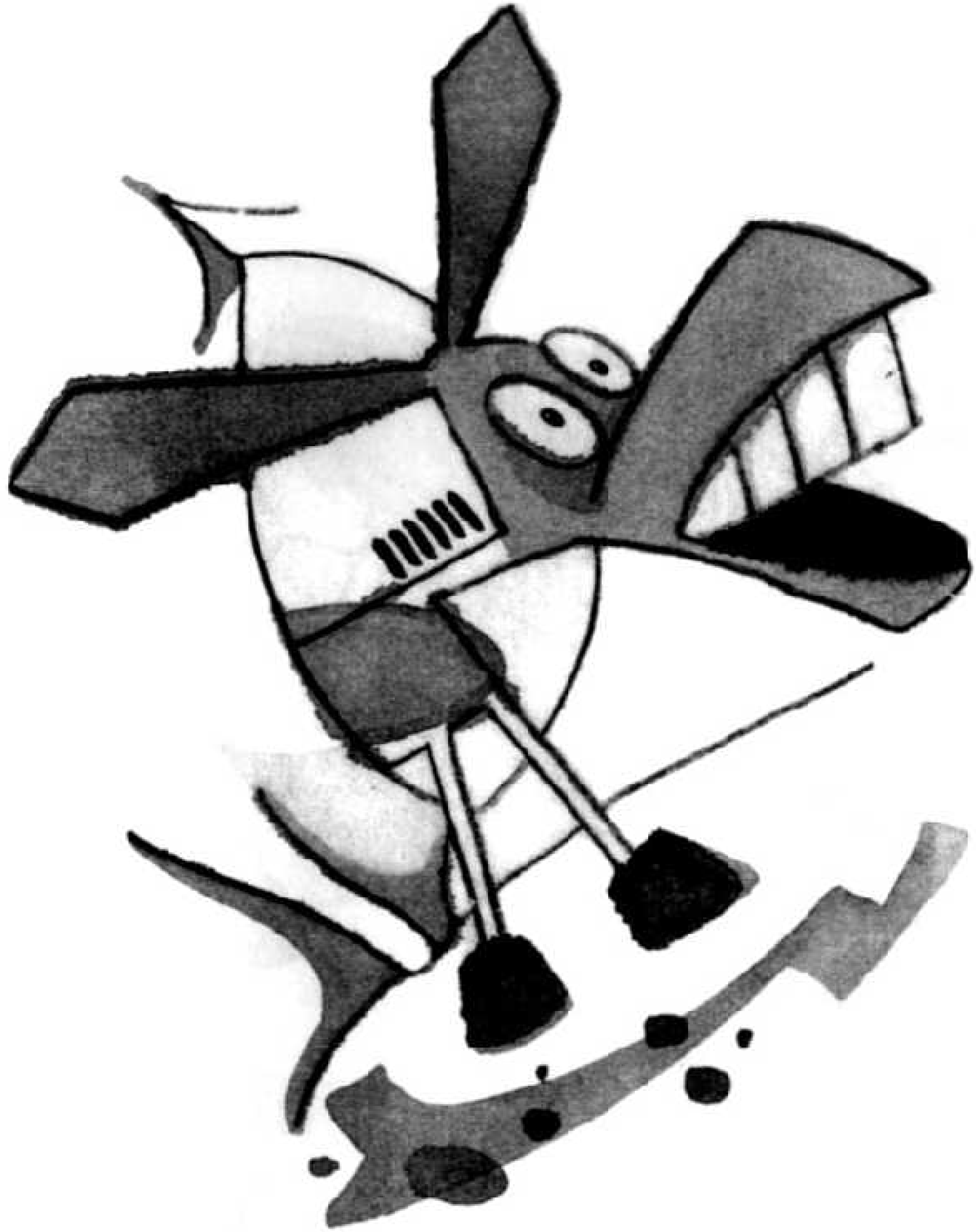

नटखट लगा चींपों...चींपों करने, 'गधे देश-दुनिया की कोई खबर नहीं रखते। बस अपने में खोए रहते हैं। इतना भी नहीं मालूम कि सरकस क्या होता है? पर मैं ज़रूर पता लगाऊँगा।'

8

अगले दिन नटखट जा पहुँचा सरकस के पिछवाड़े। सामने के गेट पर तो चौकीदार था। नटखट ने इधर-उधर देखा और फिर धीरे से तम्बू के एक कोने से अपना सिर अन्दर घुसा दिया।

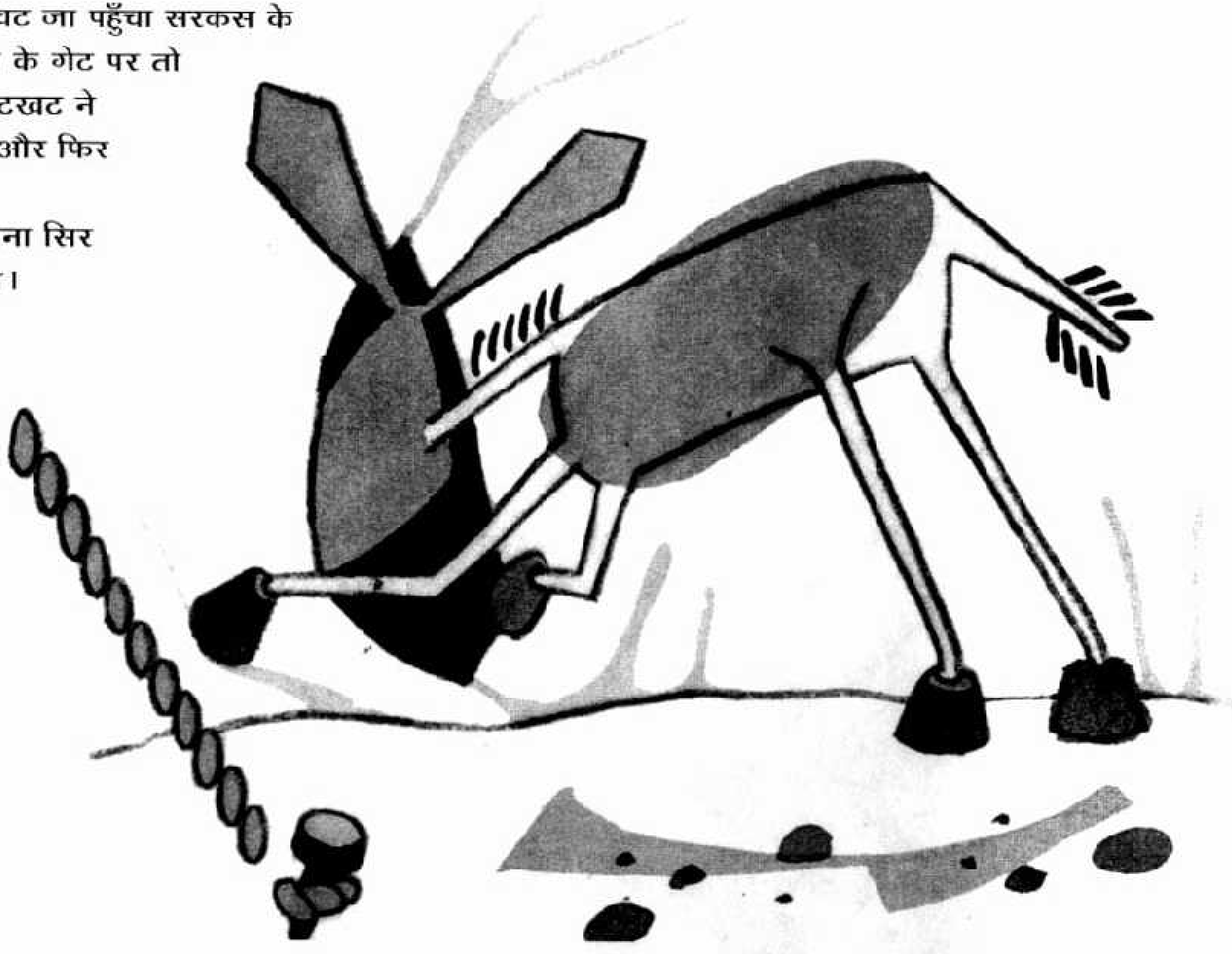

अन्दर का दृश्य देखकर उसे बड़ा मज़ा आया। स्टेज पर अजीब-सी पोशाक पहने लोग घूम रहे थे। एक कोने में बैंड पार्टी बैठी थी। स्टेज पर हाथी, भालू, कुत्ते और तोते भी थे। वे तरह-तरह के करतब दिखा रहे थे। नटखट के हाथ-पैर भी कुछ कर दिखाने के लिए फड़फड़ाने लगे।

वह धीरे से तम्बू के अन्दर आ गया।

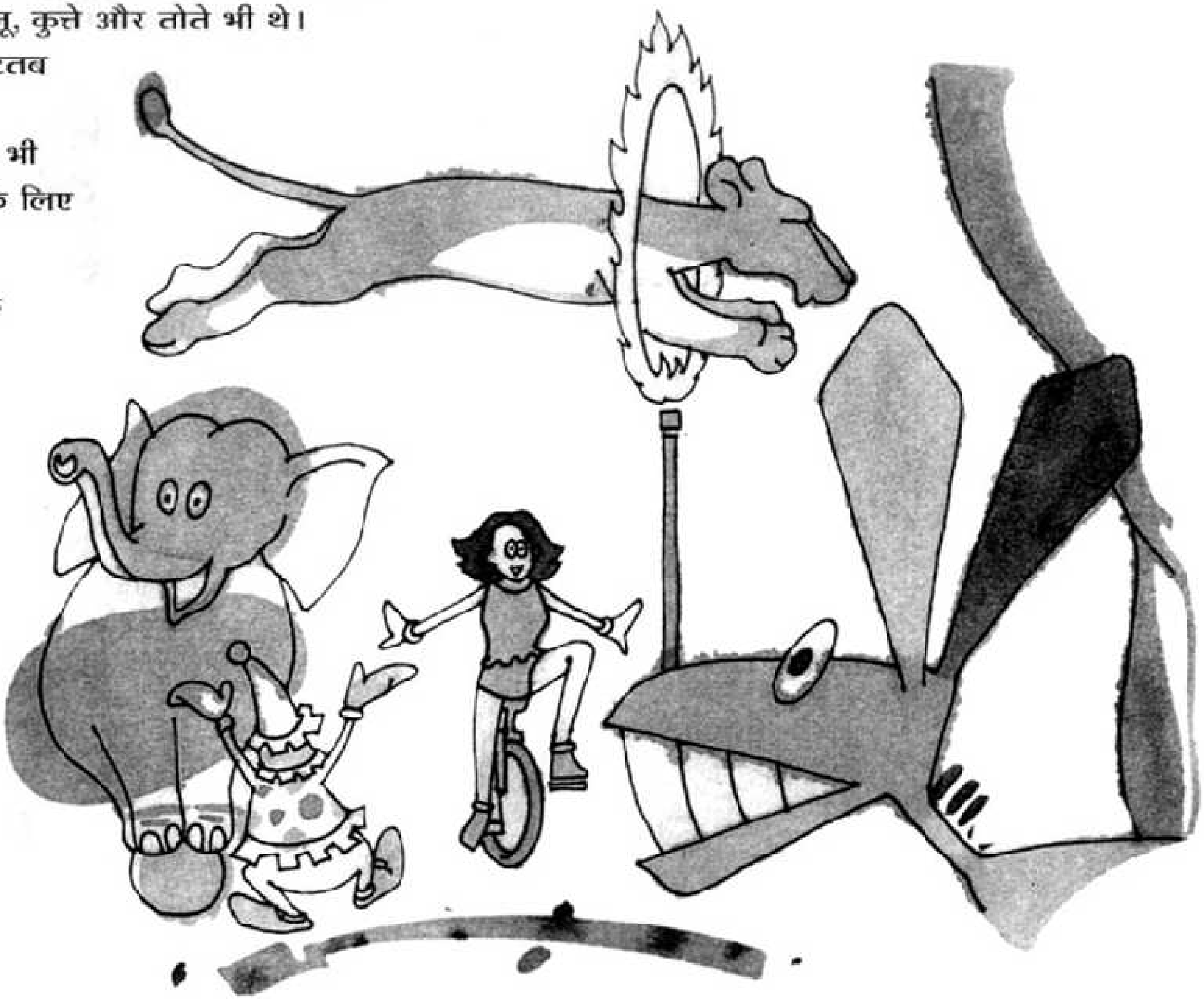

नटखट ने एक पल सोचा और फिर दौड़कर स्टेज पर जा पहुँचा। स्टेज पर हड़कम्प मच गया। जोकर नटखट को पकड़ने के लिए उसके पीछे दौड़ने लगे। थोड़ी देर बाद नटखट का मालिक धोबी भी उसे ढूँढता हुआ आ पहुँचा। वह भी उसे पकड़ने के लिए स्टेज पर चढ़ गया।

अब नटखट आगे और बाकी सब उसके पीछे।
एक चक्कर ...., दो चक्कर ....,
तीन चक्कर ....,
आखिरकार जोकर थककर बैठ गए।
पर धोबी दौड़ता रहा।
जैसे ही धोबी नटखट के करीब पहुँचता,
वह जोर की दुलत्ती झाड़ देता।
हर दुलत्ती पर दर्शकों में हँसी का
फव्वारा छूट पड़ता।

नटखट और धोबी की धमाचौकड़ी देखकर दर्शकों को बड़ा मज़ा आया।
खासतौर से बच्चों को।

उस दिन नटखट ने जैसे सरकस के खेल में नई जान फूँक दी।

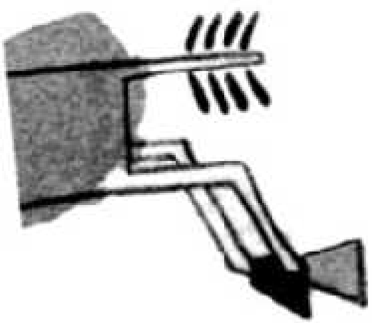

लेकिन धोबी की जान में जान तब आई जब उसने नटखट को पकड़ लिया। धोबी नटखट को लगभग घसीटते हुए ले जाने लगा। लेकिन नटखट का वहाँ से जाने का बिल्कुल मन नहीं था।

तभी सरकस का मैनेजर स्टेज पर आ पहुँचा।

मैनेजर को देखकर धोबी की घिग्घी बँध गई। वह सोचने लगा, इस गधे की वजह से अब मुझे भी मार पड़ेगी।

मैनेजर ने पूछा, 'क्यों जी गधा बेचोगे?' यह सुनकर धोबी अचकचाया और गधा मन ही मन मुस्कुराया।

धोबी बोला, 'फिर मेरे ग्राहकों के कपड़े कौन ढोएगा हुजूर!'

'देखो, तुम्हारा यह नटखट गधा सरकस का अच्छा कलाकार बन सकता है।'
मैनेजर बोला, 'ये लो दस हज़ार रुपए। तुम एक की जगह दो गधे खरीद लेना।'

इतने रुपए देखकर धोबी फूला नहीं समाया।
उसने खुशी-खुशी अपना गधा बेच दिया।

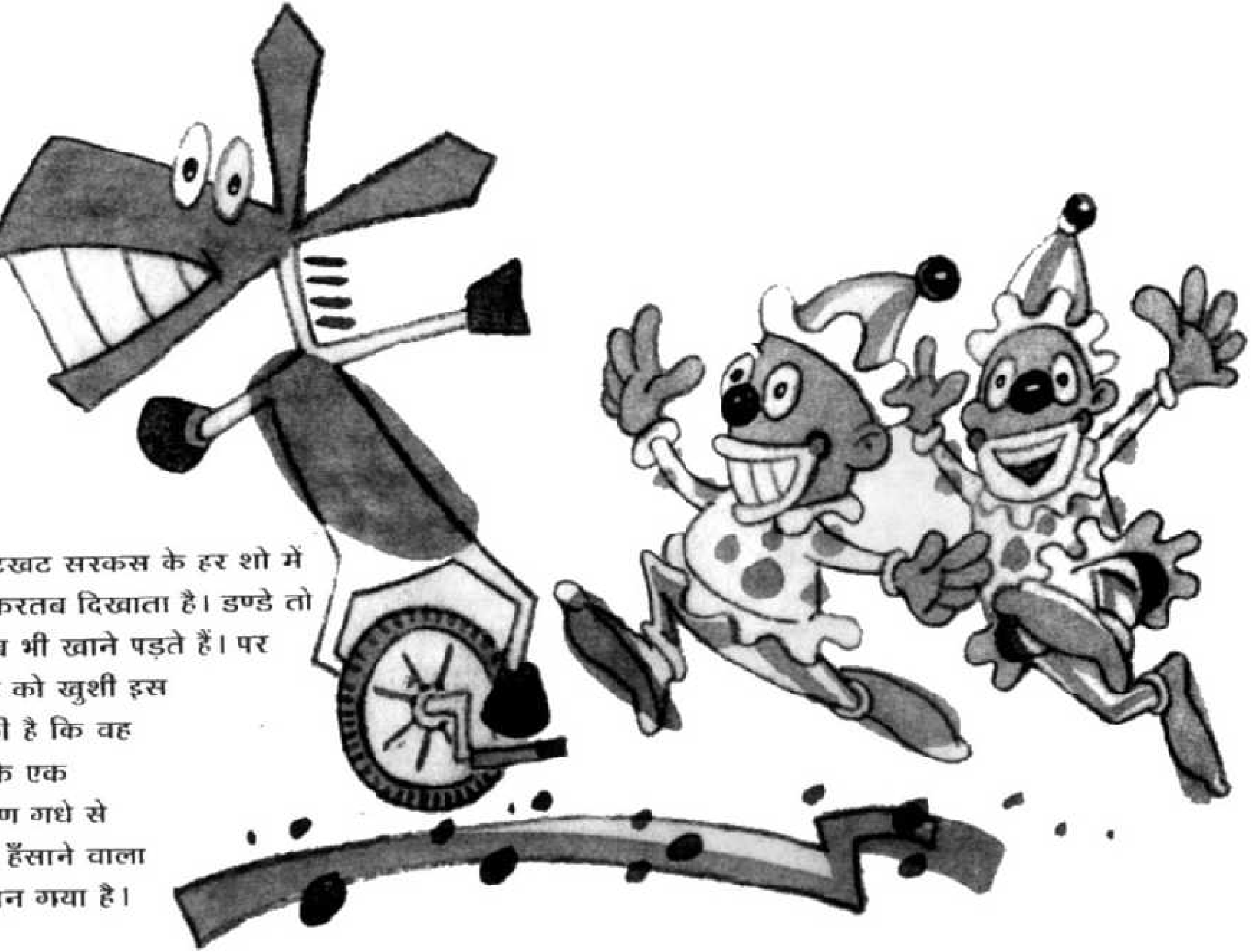

अब नटखट सरकस के हर शो में अपने करतब दिखाता है। डण्डे तो उसे अब भी खाने पड़ते हैं। पर नटखट को खुशी इस बात की है कि वह धोबी के एक साधारण गधे से सबको हँसाने वाला गधा बन गया है।

मूल्य: 20.00 रुपए

ISBN: 978 81-87171-45-4